विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2569, 14 अक्टूबर, 2025, वर्ष 1, अंक 8 (संशोधित) (जुलाई 1971 से लगातार प्रकाशित)

रजि. नं. MHHIN/25/RAA23 प्रति अंक शुल्क ₹ 0.00

अनेक भाषाओं में पत्रिका देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 100.00, (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

धम्मवाणी

यथा दण्डेन गोपालो, गावो पाजेति गोचरं।
एवं जरा च मच्चु च, आयु पाजेन्ति पाणिनं।

– धम्मपदपाळि-135, दण्डवग्गो

जैसे ग्वाला लाठी से गायों को हांक कर चरागाह में ले जाता है, वैसे ही बुढ़ापा और मृत्यु प्राणियों की आयु को हांक कर ले जाते हैं।

उद्बोधन!

मृत्युंजयी

मृत्युंजयी का प्रचलित अर्थ बड़ा भ्रामक हो गया है। "मौत पर जीत हुई" का मतलब "मौत नहीं आयेगी" ऐसा कदापि नहीं होता। हमारे मन में मृत्यु के समय की शारीरिक पीड़ा एवं मानसिक संताप होने के अनुमान का एक भीषण भय समाया हुआ है। अमर रहने की लालसा का प्रमुख कारण इस भय से त्राण पाना ही है।

"मृत्यु पर विजय" का अर्थ है– जन्म न होने देना। जन्म हो गया, जीवन-प्रवाह चल पड़ा तो फिर मृत्यु अवश्यंभावी है। उससे बचने का कोई उपाय नहीं है। यह एक अमिट धर्म-विधान है, अटल सच्चाई है। परंतु यदि जन्म होना रुक जाय तो मृत्यु से अपने आप छुटकारा हो गया। और यही निर्वाण है, मुक्ति है, मोक्ष है। विपश्यना ध्यान साधना का यही अंतिम उद्देश्य है, यही अंतिम लक्ष्य है। इस लक्ष्य की ओर हमारी प्रगति का एक माप-दण्ड हमारे मृत्यु-क्षण की अवस्था है। उस समय प्राण रोते-कराहते, भयभीत, नींद, बेहोशी या मोह-मूर्छा में निकलते हैं तो दूसरा जन्म और उससे लगी मृत्यु निश्चित ही दुःखदायी है। और इस अवस्था में यह भी निश्चित है कि मृत्यु के बाद नया जन्म किन्हीं अधोगतियों, यानी, नीची योनियों में होगा जिससे फिर मनुष्य योनि में आना अत्यंत दुर्लभ है। परंतु यदि जाग्रत अवस्था में, सचेतन अवस्था में शरीर छोड़े, यानी, उदय-व्यय रूपी अनित्य स्वभाव को समझते हुए निर्भय और शांत चित्त से शरीर छोड़े तो सद्गति होगी ही। और नितांत अनासक्त अवस्था में देह त्यागे तो निश्चित रूप से मृत्युंजयी बन ही जायेगा।

ऐसी मृत्यु को "मरने की कला" कहते हैं। यह कला तभी आयेगी जब जीने की कला आए। इस जीने की कला के लिए ही संवेदना के आधार पर विपश्यना का दैनिक अभ्यास कर रहे हैं जिसके बल पर अनित्यता का बोध दिन पर दिन स्पष्ट होता चला जायेगा, जो मृत्यु के समय चैतन्य प्रवाह को जाग्रत करेगा और यह सत्यानुभूति साधक को निर्भय और निःशोक बनायेगी ही। इस बात के प्रमाण अब तक के अनेक मृत्यु-प्राप्त साधकों में स्पष्ट रूप से पाए गए हैं। ऐसे जागरूक रहते देह-त्याग करने वाले साधकों की मृत्यु का दृष्टांत समय-समय पर पत्रिका में प्रकाशित करने का उद्देश्य साधकों में ध्यान के प्रति प्रेरणा बढ़ाना मात्र है ताकि अभ्यास की निरंतरता कायम रखते हुए साधक सही माने में मृत्युंजयी बन सके।

– वर्ष 10, अंक 7, बुद्धवर्ष 2524, दि. 21-12-1980 से साभार.

पूज्य पिताजी की शरीर-च्युति (क्र.)

— सत्यनारायण गोयन्का

[यह पत्रांश पूज्य गुरुजी द्वारा बरमा स्थित अपने से बड़े भाई श्री बाबूलाल गोयन्का (बाबू भैया) को लिखे गये मर्मांतक पत्र का शेषांश है।

नेपाल और भारत की सीमा पर– उस पार बीरगंज और इस पार (बिहार का) रक्सौल नगर है जो आपस में सटे हुए हैं। रक्सौल में 1 से 12 सितंबर, 1972 तक विपश्यना का एक शिविर लगा, जिसके बीच में मुंबई से पूज्य गुरुजी के पिताजी की जांघ की हड्डी टूटने की दुर्घटना का समाचार मिला। शिविर समापन के पश्चात पूज्य गुरुजी कष्टप्रद हवाई यात्रा करते हुए बंबई आये, जो पिछले अंक (सितंबर, 2025) में छप चुका है।

यहां एक बात यह भी बता दें कि रक्सौल के बगल में केवल आधे घंटे की दूरी पर बीरगंज के हवाई अड्डे से पटना के लिए सीधी विमान सेवा उपलब्ध थी, जिससे जाने पर उनका बहुत-सा समय बच जाता। स्थानीय लोगों ने उसी से जाने का आग्रह किया और कहा कि आप से कोई पूछेगा भी नहीं कि आप कहां के नागरिक हैं? (उस समय आज की तरह इतने कड़े नियम नहीं थे) परंतु पूज्य गुरुजी के पास बर्मा का पासपोर्ट था जिस पर केवल भारत जाने की अनुमति थी। नेपाल की सीमा में घुस कर बंबई जाने के बारे में वे सोच भी नहीं सकते थे, भले उसके लिए कितना ही कष्ट क्यों न उठाना पड़े। ऐसा था उनका स्वदेश-प्रेम, स्वदेश के प्रति निष्ठा और सद्धर्म के प्रति समर्पण की भावना। – संपादक]

पत्रांश क्रमशः...

पूज्य पिताजी का धैर्य और करुणा

पड़ाव: बम्बई (मुंबई), 23 सितंबर, 1972

बाबू भैया, सादर वन्दे!

जिस दिन दुर्घटना हुई, वे अपने नित्य-नियम के अनुसार समुद्र तट पर

सैर कर लेने के बाद, भुलेश्वर में मंदिरों के पास बैठे भिखारियों को फल इत्यादि बांट रहे थे, उसी समय सड़क के फुटपाथ पर गैरकानूनी फल इत्यादि बेचने वालों की धर-पकड़ के लिए कारपोरेशन के सिपाहियों की एक टुकड़ी आई, जिससे सारे फुटपाथ पर भगदड़ मच गई। इस हंगामे में वे भी फुटपाथ पर से नीचे सड़क पर आ गए और सड़क पर से गुजरने वाली एक घोड़ागाड़ी (विक्टोरिया) के घोड़े से टकराकर गिर पड़े, जिससे उनकी जांघ की हड्डी टूट गई। कार में बैठकर घर आ गए और घर आने के कुछ देर बाद बताया कि उनकी जांघ में बड़ी पीड़ा है। तत्काल बम्बई के प्रसिद्ध हड्डी चिकित्सक के अस्पताल में ले जाये गए तो पता चला कि हड्डी टूट गयी है। वहां वे 4 दिन तक रहे। इतनी बड़ी दुर्घटना के बावजूद उनका धैर्य और सहनशीलता अनुपम थी। अस्पताल में रहने के समय जब घटना की जांच पड़ताल शुरू हुई, तो उनके मन की करुणा उस बेचारे गाड़ीवान की ओर उमड़ी। कहने लगे मुझे जो कष्ट हुआ सो हुआ, उस बेचारे गरीब आदमी को ये पुलिस वाले तंग न करें! उनसे कह दो कि उस गाड़ी वाले का जरा भी दोष नहीं था, मैं अपनी दुर्बलता के कारण ही गिरा।

सहनशीलता और विनोदी स्वभाव

एक बार प्रधान चिकित्सक देखने आया और पूछा, "क्या आपके पांव में पीड़ा है?" तो बाबा ने तुरंत उत्तर दिया, "नहीं! मुझे कोई पीड़ा नहीं है।" डॉक्टर ने चुटकी लेते हुए पूछा– "तो फिर अस्पताल में क्यों पड़े हैं?" इस पर तपाक से उत्तर दिया– "मुझे अस्पताल में रहने का शौक चढ़ा इसलिए।" और फिर खूब हँसे, साथ ही डॉक्टर भी हँसा और अन्य लोग भी हँसने लगे। डॉक्टर के जाने के बाद कहने लगे कि उसने मुझसे मजाक किया तो मैं और क्या कहता?

कभी-कभी पांव में कोई पीड़ा जागती तो अनायास मुँह से एक कराह निकल पड़ती। नर्स दौड़ी हुई आती। पास बैठा हुआ कोई सदस्य बाबाजी की ओर दुःखभरे नेत्रों से देखता और पूछता कहां पीड़ा है? तो बड़े जोरों से हँसते और कहते, "नहीं रे, मुझे कहां पीड़ा है!" नर्स भी विस्मयपूर्ण प्रसन्नता से भर उठती और परिवार के लोग भी। सचमुच आश्चर्य की बात थी कि उन्हें अपनी पीड़ा का कोई बोध नहीं था। एक दिन बड़े भैया से अनुरोध करने लगे कि बिस्तर पर पड़े-पड़े मैं तंग आ गया हूं। मैं संडास में जाकर निपटना चाहता हूं। इस पर किसी ने कहा, "बाबूजी आप संडास में कैसे जाएंगे? आपका पांव तो टूटा हुआ है।" जैसे कोई बहुत दिनों की भूली बात याद दिला दी। बहुत ही निश्छल भोलेपन से बाबाजी ने कहा, "अरे हां, मैं तो भूल ही गया था कि मेरा पांव टूटा हुआ है।" इस कदर कोई अपनी पीड़ा कैसे भुला सकता है? मुझे तो लगता है कि इस भूलने का मुख्य कारण उनका अपना जीवन भर का अभ्यास था, जिसके द्वारा उन्होंने अपनी बड़ी-से-बड़ी पीड़ा को कभी कोई महत्त्व दिया ही नहीं। बड़े-से-बड़े दुःख को विनोद में टाल देना, उन्होंने अपने स्वभाव का अंग बना लिया था।

एक दिन किसी ने पूछ लिया, "बाबाजी आप का इलाज कैसा चल रहा है?" तो बड़े व्यंग्य-विनोद से उत्तर दिया, "यहां डॉक्टरों की कोई कमी नहीं है।" उन्हें यह बात बड़ी अप्रिय लगती थी कि उनकी चिकित्सा के लिए इतने सारे डॉक्टरों का जमघट लग जाता है। एक दिन तो बड़ा उलाहना देते हुए बोले– "मेरे पीछे इतने डॉक्टर क्यों लगा रखे हैं?" इस उलाहने में भी विनोद की ही प्रधानता थी। बार-बार डाक्टरों का आना, किसी का ग्लूकोज चढ़ाना, किसी का ब्लड प्रेशर मापना, किसी का बुखार देखना, किसी का कफ निकालना और बार-बार सूइयों का दिया जाना, ये सब उन्हें सचमुच बड़े अप्रिय लग रहे थे। इन सारी बातों से वे बहुत नाराज होते और बार-बार इनका विरोध करते। जीवन की अंतिम घड़ियां वे शांति से बिताना चाहते थे, परंतु घरवाले कैसे मान लें कि ये उनके जीवन की अंतिम घड़ियां हैं। अतः उनकी ओर से, और डॉक्टरों की ओर से चिकित्सा का क्रम अटूट रखा गया। और कोई चिकित्सा की बात करता तो वे उसे झाड़ देते, परंतु बड़े भैया जब बड़े प्यार और आदर से कहते तो उनका आग्रह नहीं टाल पाते। बड़े भैया के आग्रह को वे मान तो लेते परंतु उनका मन भीतर से विद्रोह ही करता। एक दिन सुबह-सुबह श्यामबिहारी को बुलाया और कहा कि कागज-पेंसिल लेकर मेरे पास बैठ जाओ। सबके कान खड़े हो गए कि बाबोजी न जाने अपनी कौन-सी अंतिम इच्छा लिखवाएंगे और बाबोजी ने लिखवाना शुरू किया– "लिख सुबह 6:00 बजे एक डॉक्टर आया और उसने एक सूई दी, आधे घंटे बाद दूसरा आया और उसने ब्लड-प्रेशर देखा, फिर तीसरा आया, उसने ग्लूकोज चढ़ाया, फिर चौथा आया उसने सात सूइयां दी।" – यह था उनका चिकित्सा के प्रति प्रदर्शन, पर किस विनोद-व्यंग्य से भरा हुआ। यह विनोदमयी घटना उनके जीवन के अंतिम दिन की है। जीवन भर का विनोदी स्वभाव अंतिम समय में उनका साथ कैसे छोड़ता?

सचेतनता और जागरूकता ऐसी कि लोग दांतों तले उंगली दबा लें। जब उन्होंने श्याम बिहारी को डॉक्टरों के दैनिक कार्यों की सूची लिखाते हुए कहा कि एक डॉक्टर ने सात सूइयां दी, तो बड़े भैया ने विनोद में ही प्रतिवाद किया– "नहीं पिताजी सात कहां दी?" तो कहने लगे, "कैसे नहीं दी?" और सचमुच तथ्य यही था कि उस डॉक्टर ने एक के बाद एक सात सूइयां उन्हें दी थी, जिसके प्रति वे इतने जागरूक थे। मृत्यु के एक दिवस पूर्व उनकी चेतना जरा मंद पड़ी और अर्धचेतन अवस्था में वे कुछ बहकने लगे। उनका ताश खेलने का स्वभाव तो था ही। इस रुग्ण अवस्था में भी कभी किसी बच्चे को अथवा अतिथि को साथ बैठाकर ताश खेलने लगते। इस अर्ध-चेतन अवस्था में भी ताश के खेल की ही बातें करने लगे तो बड़े भैया का मन दुःखी हुआ कि उनकी मृत्यु की घड़ी समीप है और इस समय यदि उनका अंतर्मन ताश-खेलने के व्यसन में लगा रहा तो इनकी सद्गति कैसे होगी? परंतु बड़े भैया की चिन्ता का कारण देर तक बना न रह सका। उन्हें शीघ्र ही पूरा होश आ गया। ऐसा होश जो कि दूसरे दिन, यानी, मृत्यु के दिन तो लोगों को आश्चर्य-चकित करने लगा।

असाधारण चैतन्यता

सारी इंद्रियां असाधारण रूप से जागरूक हो उठीं। दूर खड़े व्यक्तियों को इस कदर साफ देखने लगे, दूर के शब्दों को इस कदर साफ सुनने लगे कि सेवा में लगे हुए लोगों को आश्चर्य-चकित कर दिया। शरीर के किसी भी अंग को कोई जरा-सा भी छू दे तो तुरंत प्रतिक्रिया करते। इस कदर सारे शरीर की संवेदना तीव्र हो उठी थी। जैसे ही शरीर की इंद्रियां सजग हुईं, वैसे ही मन और बुद्धि भी सजग हो उठी और अंत समय तक यह सजगता बनी रही।

अंतिम समय में उनकी आंखें कमरे में चारों ओर कुछ देखने लगीं। निश्चय ही वे उपस्थित लोगों में से किसी को नहीं देख रहे थे, बल्कि अपने दिव्य गति-निमित्त को देखते-देखते उन्होंने अंतिम सांस ली। किसी को विश्वास भी नहीं हुआ। न कोई हिचकी आई, न कहीं कंठ अवरुद्ध हुआ, न सांस लेने में कोई घुटन महसूस हुई। जैसे एकाएक सो गए और शांत प्रसन्न चित्त से सचमुच चिर-निद्रा में सो गए। चेहरे पर मृत्यु का कोई चिह्न नहीं। ऐसा प्रसन्न, शांत, दिव्य तेजस्वी चेहरा मानो खूब गहरी नींद में सोए हुए हों। 1:45 बजे दोपहर को अंतिम सांस ली और दूसरे दिन सुबह 9:00 बजे

अंत्येष्टि की तैयारी की गई, परंतु तब तक भी मुख-मंडल पर वही शांति और चेहरे पर वही आभा, शरीर का वही लचीलापन। मृत व्यक्ति के कोई चिह्न नहीं, सिवाय इसके कि डॉक्टर ने शरीर को सचमुच निष्प्राण घोषित कर दिया। शरीर को अंतिम स्नान कराते समय जो चित्र लिया गया, उसे तुम देखोगे तो आश्चर्य करोगे, मानो, जीवित अवस्था में ही लेटे-लेटे उन्होंने सिर उठाकर एक ओर करवट बदली हो। चित्र की इस मुद्रा को कोई भी मृत शरीर की मुद्रा कैसे कह सके?

निरावरण शव-यात्रा

बड़े भैया ने सचमुच अच्छा निर्णय किया कि शव-यात्रा में परंपरा को तोड़कर उनके इस दिव्य चेहरे को निरावरण ही रखा, जिससे कि परिचित अपरिचित सभी लोग उस संत पुरुष के जीवन से ही नहीं, बल्कि मृत्यु से भी प्रेरणा प्राप्त कर सकें। बड़े भैया ने मुझे बताया कि किस प्रकार उनकी मृत्यु के तुरंत बाद अस्पताल का वह कमरा दिव्य धर्मधातु से स्पंदित हो उठा। उनका शरीर घर लाकर जिस स्थान पर लिटाया गया वहां भी धर्म का वातावरण बन गया और सारी रात लोग उनके पास बैठे साधना करते रहे अथवा धर्मपाठ करते रहे।

और ऐसा क्यों नहीं होता भला! जो दिव्य गति उन्होंने प्राप्त की, उसका दिव्य प्रभाव सारे वातावरण में होना स्वाभाविक ही था। सद्गति का मूल कारण उनके अपने कुशल संस्कारों का संचय था, जो कि अपने स्वभाव से ही जागता रहा। परंतु उसे जागृत करने में धर्म ने, बड़े भैया ने, उनके धर्ममय परिवार ने, पूरा योगदान दिया। अतः अंत समय में ऐसा होना स्वाभाविक ही था।

अद्भुत अनासक्ति

वे जीवन भर अनासक्ति का ही तो अभ्यास करते रहे। न जाने कितने जन्मों से अनासक्ति का यह अभ्यास चल रहा होगा। हमने देखा कि जीवन भर उन्होंने किसी के प्रति कोई आसक्ति पैदा होने ही नहीं दिया। अपना कर्तव्य खूब निभाया, परंतु बिना चिपकाव के। कोई बीमार हो तो उसका खूब इलाज होना चाहिए, परंतु रोना या क्रंदन करना बिल्कुल नहीं। कोई मर जाए तो उसके बाद उसके लिए रोना या क्रंदन करना सीखा ही नहीं था। अद्भुत अनासक्ति थी उनमें, तभी तो मृत्यु का पूर्वाभास होने के बावजूद उन्होंने कभी किसी के प्रति कोई राग प्रकट ही नहीं किया। तुम्हारे प्रति उनका कितना स्नेह था और कितना चाहते थे कि तुम वहां के जंजाल से किसी प्रकार निकल आओ, परंतु अंतिम समय में तुम्हें याद नहीं किया। मैं जब कभी शिविर से लौटकर आता तो मिलकर बड़े प्रसन्न होते थे। शिविर की कितनी सारी बातें पूछते थे। भारत में लगे पहले शिविर में तो भाग लिया ही था, तत्पश्चात बम्बई में जो भी शिविर लगते तो उनके समापन में अवश्य सम्मिलित होते और इतने लोगों की आंखों में भरी श्रद्धा, प्यार और कृतज्ञता के भाव देखकर आत्म विभोर हो उठते। मेरे प्रति इतना गहरा स्नेह होने के बावजूद मृत्यु के समय मैं याद नहीं आया।

मृत्यु के समय किसी की भी याद उन्हें नहीं सतायी। किसी को याद नहीं किया, इसका अर्थ यह नहीं कि उनका किसी पर प्यार नहीं था। प्यार तो उनमें उमड़ा पड़ा था। अंतिम दिन तो परिवार के एक-एक सदस्य को अपने पास बैठा कर बड़े प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा, मानो उसे जीवन भर सुखी रहने के लिए अंतिम आशीर्वाद दे रहे हों। परंतु उनका यह प्यार वास्तव में आसक्त व्यक्ति का-सा प्यार नहीं था। वे निर्मम-निर्मोही नहीं थे, परंतु निश्चय ही ममतासक्त और मोहासक्त भी नहीं थे।

शास्त्रों की बारीकियों में उलझ कर बाल की खाल खींचते हुए बौद्धिक स्तर पर अनासक्ति की व्याख्या करने वाले दरअसल अनासक्त नहीं हुआ करते। जो वस्तुतः अनासक्त होते हैं, उनके लिए अनासक्ति का सैद्धांतिक विवेचन कोई अर्थ नहीं रखता। ऐसे ही वास्तविक अनासक्त हमारे पूज्य पितृदेव थे। उनकी शांत शरीर-च्युति पर क्रंदन-विलाप का प्रश्न ही कहां! हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य कि हम ऐसे संत पुरुष की संतान हुए। हमारा सौभाग्य अनेक गुणा संवर्धित हो उठेगा जबकि हम उनके सद्गुणों को अपने व्यावहारिक जीवन में उतार पाएंगे।

तुम्हारा अनुज,

सत्य नारायण गोयन्का

पत्रिका संबंधी सूचनाः–

विपश्यना पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं पोस्टिंग संबंधी समस्याएं

पिछले कुछ वर्षों से विपश्यना पत्रिका को पोस्ट करना एक समस्या बन गया है। पहले तो इनके पुराने पंजीकरण बदलने पड़े और नये शिरे से पंजीकरण करवा कर पोस्ट करने की नौबत आयी, और उसके बाद इन्हें पोस्ट करने को लेकर समस्या खड़ी हो गयी। डाक-विभाग ने पूर्व निर्धारित सस्ती दर पर पोस्ट करने से इन्कार कर दिया, यानी, अब तक जो 25 पैसे प्रति अंक की दर से भेजी जाती थी, अब उसके लिए 2.50 रुपये प्रति अंक देना पड़ रहा है। फिर भी समय पर मिलने की कोई गारंटी नहीं। अनेक लोगों को बार-बार शिकायत करने पर भी पत्रिका नहीं मिलती, चाहे सब कुछ सही हो तब भी। पेपर, छपाई, पोस्ट करने लायक बनाकर पोस्ट-ऑफिस तक पहुँचाना आदि का खर्च भी दुगुना से अधिक हो गया है। इसलिए हम लोग इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि–

1. इस लिंक ***https://play.google.com/store/apps/details?id=com.vipassanameditation*** से अपने मोबाइल पर "**Vipassana Meditation**" **ऐप** डाऊनलोड करके उस पर पत्रिका पढ़ें, जिसके अक्षर बहुत बड़े-बड़े हैं और एक ही कॉलम में बड़ी आसानी से पढ़े जा सकते हैं। *अथवा*

2. VRI की नियमित website– ***https://www.vridhamma.org/newsletters*** पर क्लिक करके सीधे पत्रिका सेक्सन में जाकर पढ़ें या वहां से पत्रिका डाऊनलोड करके छाप सकते हैं। *अथवा*

3. अपना ई-मेल का पता नोट करवा दें जिस पर सामूहिक रूप से सब को एक साथ ही पत्रिका भेज दी जाया करेगी, जिसे आप जब चाहें, जैसे भी चाहें वैसे छाप कर पढ़ें या डेस्कटाप पर देखें।

उपरोक्त तीनों में से जिस किसी ऑप्सन से आप संतुष्ट हैं उसके बारे लिख कर– "विपश्यना विशोधन विन्यास" को निम्न ईमेल: patrika.vri@gmail.com से सूचित करें कि आप अपनी पत्रिका– इस रूप में पढ़ना चाहेंगे और आप को छपी हुई प्रति भेजने की आवश्यकता नहीं है। ताकि पोस्ट से भेजने की सूची में से आप का नाम हटाया जा सके और पोस्टेज का खर्च व्यर्थ न जाय, चाहे आप स्थाई सदस्य यानी, लाइफ मेम्बर ही क्यों न हों।

मंगल मृत्यु

श्री के.बी. चिकनारायणप्पा, बेंगलूरु के 99 वर्षीय विपश्यनाचार्य 26 सितंबर, 2025 को शांतिपूर्वक दिवंगत हुए। 1988 में पहला विपश्यना शिविर करने के बाद वे इसी के होकर रह गये। 1994 में स.आ. बने और 2005 में आचार्य। 2005 से 2012 तक उन्होंने धम्मपफुल्ल, बेंगलूरु के केंद्र-आचार्य बन कर अनेक प्रकार से अपनी अथक सेवाएं दी। शिविर-संचालन सामग्री का कन्नड़ भाषा में अनुवाद करने के अतिरिक्त अनेक धर्म-साहित्यों का भी अनुवाद किया जो कर्नाटक के लोगों को धर्म की ओर खींचने में बहुत सहायक हुआ। अपनी धर्मसेवाओं के फलस्वरूप वे धर्मपथ पर अग्रसर होकर निब्बानलाभी हों, धम्मपरिवार की यही मंगल कामना है।

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्री विनोदकुमार वतनी, मराठवाडा (छत्रपति संभाजी नगर (औरंगाबाद), जालना, बीड और लातूर) जिले के लिए समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य के रूप में सेवा
2. डॉ संग्राम जोधळे, मराठवाडा (नांदेड, हिंगोली, धाराशिव (उस्मानाबाद) और परभणी) जिले के लिए समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य के रूप में सेवा
3. Mr. Swarn Sandhu, To Serve as Centre Teacher of Dhamma Rasmi, Australia

नये उत्तरदायित्व
आचार्य

1. श्री योगेश एवं श्रीमती अल्का अग्रवाल, धम्म संबोधि विपश्यना केंद्र बोधगया के लिए केंद्र आचार्य के रूप में सेवा

नव नियुक्तियां
सहायक आचार्य

1. श्री भूषण संघ, मुंबई
2. श्रीमती मीनाक्षी पाखरे, पुणे
3. Mr. Sun Hong Jie, China

बाल शिविर शिक्षक

1. श्री मेधंकर, लखीमपुर खीरी, उ.प्र.
2. श्री आशीष भाटिया, मोहाली, पंजाब

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक-दिवसीय महाशिविर:

1. रविवार, 18 जनवरी, 2026 माताजी की पुण्य-तिथि (5 जनवरी, 2016) एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि (19-1-1971) के उपलक्ष्य में।

2. एक दिवसीय शिविर प्रतिदिनः

इनके अतिरिक्त विपश्यना साधकों के लिए पगोडा में प्रतिदिन **एक दिवसीय शिविर** आयोजित किए जा रहे हैं। कृपया शामिल होने के लिए निम्न लिंक का अनुसरण करें और एक बड़े समूह में ध्यान करने के अपार सुख का लाभ उठाएं— *समग्गानं तपोसुखो*। **सब के लिए संपर्क: 022 50427500 (Board Lines)** - Extn. no. 9, मो. **+91 8291894644.** (प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register; **Email:** oneday@globalpagoda.org

3.'धम्मालय' विश्राम गृह

एक दिवसीय महाशिविर के लिए आने पर रात्रि में **'धम्मालय'** में विश्राम के लिए सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्कः** 022 50427599 or Email- *info.dhammalaya@globalpagoda.org or info@globalpagoda.org*

दोहे धर्म के

ब्रह्म देवता मनुज पशु, सभी मृत्यु आधीन।
पर ज्ञानी करता रहे, पुनर्जन्म को क्षीण॥

अपना-अपना कर्मफल, भोग स्वयं ही भोग।
कौन बँटा पाये भला, जरा मृत्यु का योग॥

जीवन भर बढ़ती रहे, सुखद पुण्य की बेल।
मरणकाल जाग्रत रहे, होय स्वर्ग से मेल॥

शरण ग्रहण कर धरम की, कर निज चित्त अशोक।
वरण करे जो मरण को, गमन करे सुरलोक॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

जीवन जीणै री कळा, सुद्ध धरम संजोग।
म्रित्यु मरणै री कळा, विपस्सना रै जोग॥

धन दोलत प्रिय बंधुजन, काम न कोई आय।
म्रित्यु रै छण विपस्सना, होसी परम सहाय॥

समझोतो की रो हुयो, म्रित्युराज रै साथ।
डंको बाज्यो कूच रो, चाल्यो खाली हाथ॥

दुक्ख भोगणो छोडकर, दुक्ख देखणो जाण।
म्रित्यु रो दुख देखतां, हँस हँस छूटै प्राण॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकॉफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2569, 14 अक्टूबर, 2025, वर्ष 1, अंक 8

वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 100.00, (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50) "विपश्यना" (संशोधित) रजि. नं. MHHIN/25/RAA23, **प्रति अंक शुल्क ₹ 0.00**

Posting day- **14th of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)
DATE OF PRINTING: 10 October, 2025, DATE OF PUBLICATION: 14 October, 2025

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org